SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रेहन पर रग्घू उपन्यास में पीढ़ीगत द्वंद्व

भारती शर्मा, शोधार्थी, **सुमन शर्मा,** Ph.D., शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
भारती शर्मा, शोधार्थी
सुमन शर्मा, Ph.D.
E-mail : bhartiupadhyay2807@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 25/05/2024
Revised on : 18/07/2024
Accepted on : 27/07/2024
Overall Similarity : 02% on 19/07/2024

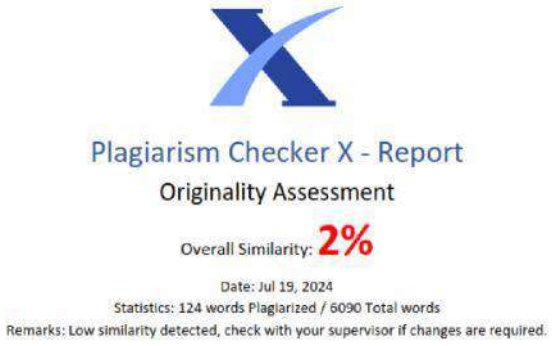

शोध सार

आयु के आधार पर समाज भौतिक रूप से युवा पीढ़ी, प्रौढ़ पीढ़ी तथा वृद्ध पीढ़ी आदि रूप में विभाजित दिखाई देता है। यहाँ प्रौढ़ावस्था युवा एवं वृद्ध पीढ़ी के मध्य कड़ी है। प्रत्येक मनुष्य युवावस्था से प्रौढ़ावस्था और फिर प्रौढ़ावस्था से वृद्धावस्था को प्राप्त करता है। इसी प्रक्रिया के दौरान इन अवस्थाओं के समय भी काफी अंतर आ जाता है। चूंकि युवावस्था का प्रारंभ सामान्यतः 18 वर्ष से माना जाता है और वृद्धावस्था 60 वर्ष के पश्चात् की अवस्था है। इस प्रकार इतने वर्षों के अंतराल के कारण इन दोनों पीढ़ियों के मध्य विचारों, मूल्यों, संस्कारों, अभिरुचियों तथा तकनीकी आदि में भी अंतर होने लगता है। समाज में युवावस्था 'नई पीढ़ी' और वृद्धावस्था 'पुरानी पीढ़ी' की दृष्टि से देखी जाती है। नई पीढ़ी नए मूल्यों के साथ अपने भविष्य की ओर देखती है और पुरानी पीढ़ी अपने जमाने के मूल्य एवं संस्कृति के साथ अपने अतीत को याद करती हुई नए मूल्य एवं संस्कारों की आलोचना करती रहती है। इसी कारण इन दोनों पीढ़ियों के मध्य इस अंतराल को पीढ़ी संघर्ष में परिवर्तित होते देर नहीं लगती। दोनों पीढ़ियों में परस्पर विचारों, अभिरुचियों, मूल्यों एवं संस्कारों, विश्वासों तथा आधुनिक तकनीकी को लेकर द्वंद्व होने लगता है। समय के अनुसार लोगों के जीने के तरीके, सोचने के तरीके एवं संपूर्ण व्यवहार में अद्भुत परिवर्तन होते रहते हैं और यह परिवर्तन पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते है। वास्तव में कहा जाए तो ये परिवर्तन द्वंद्व या संघर्ष के ही परिणाम होते हैं। इन परिवर्तनों के चलते यह द्वंद्व व्यक्ति का स्वयं से, व्यक्ति का व्यक्ति से, नई पीढ़ी का नई पीढ़ी से, पुरानी पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी से या नई पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी से हो सकता है। वैसे यह द्वंद्व होना स्वाभाविक है किंतु समस्या तब होती है जब ये द्वंद्व समाज में विकृत रूप ले लेता है और इसके कारण कोई वर्ग या पीढ़ी समाज की मुख्य धारा से दूर होती नजर आती है, उसे हाशिए पर

लाकर खड़ा कर दिया जाता है। वृद्ध पीढ़ी के शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण समाज में इस पीढ़ी अंतराल के कारण उत्पन्न द्वंद्व की स्थिति का सबसे हानिकारक प्रभाव यह दिखाई दे रहा है कि युवा पीढ़ी अपने तरुण होने के जोश में वृद्ध पीढ़ी की कमजोरियों को नजरअंदाज करके उनकी अपने आप से तुलना करने लगती है। इस पीढ़ीगत द्वंद्व को हिंदी साहित्य के कई उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इनमें प्रमुख उपन्यास हैं– ममता कालिया का 'दौड़', चित्रा मुद्गल का 'गिलिगडु', कृष्णा सोबती का 'समय सरगम' सूरज सिंह नेगी के 'नियति चक्र', 'वसीयत' 'सांध्य पथिक', रवींद्र वर्मा का 'पत्थर ऊपर पानी' हृदयेश का 'चार दरवेश' ज्ञान चतुर्वेदी का 'पागलखाना' आदि। इन उपन्यासों में नई (युवा) पीढ़ी एवं पुरानी (वृद्ध) पीढ़ी में आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक आदि क्षेत्रों के परंपरागत एवं आधुनिक मूल्यों को लेकर परस्पर द्वंद्व उत्पन्न होने की परिस्थितियों का चित्रण किया है और इनके संभावित समाधानों को उकेरने की कोशिश की गई है। इसी प्रकार के टकराव पर काशीनाथ सिंह ने अपने उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में प्रकाश डाला है। काशीनाथ सिंह द्वारा लिखित 'रेहन पर रग्घू' बहुचर्चित उपन्यास में अन्य कई समस्याओं के साथ–साथ पीढ़ी अंतराल के कारण उत्पन्न समस्याओं को भी उभारा गया है। इसमें पीढ़ियों में आपसी द्वंद्व का मुख्य कारण पाश्चात्य संस्कृति और वैश्वीकरण का नई पीढ़ी पर पड़ने वाले प्रभावों को बताया गया है। वृद्ध पीढ़ी रघुनाथ के माध्यम से लेखक ने इस पीढ़ीगत द्वंद्व की समस्याओं के सुलझाने हेतु संभावित समाधान देकर इस रचना को श्रेष्ठ बनाया है।

मुख्य शब्द

पीढ़ीगत, द्वंद्व, परिवर्तन, समाज, वैश्वीकरण, नगरीकरण.

लेखक– हिंदी कथा साहित्य के प्रतिष्ठित साहित्यकार काशीनाथ सिंह का जन्म 01 जनवरी 1937 को उत्तर प्रदेश के बनारस जिले में जीयनपुर नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम 'श्री नागर सिंह' था जो कि पेशे से गाँव के एक स्कूल में मास्टर थे। माता 'श्रीमती बागेश्वरी देवी' एक गृहणी थीं। यह तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। उनके बड़े भाई हिंदी के प्रख्यात आलोचक 'प्रो. नामवर सिंह' थे जो किसी परिचय के मुहताज नहीं है। वहीं मझले भाई का नाम 'राम सिंह' है। कालजयी लेखक और 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित प्रो. काशीनाथ सिंह हिंदी कथा–साहित्य में एक बहुचर्चित नाम है। वहीं साठोत्तरी कहानी में अगर काशीनाथ सिंह का जिक्र न हो तो यह अधूरा सा लगता है। इन्होनें कई दशकों तक साहित्य जगत में केवल गद्य विधाओं में रचनाएँ की जिनमें उनके उपन्यास 'काशी का अस्सी', 'रेहन पर रग्घू' (साहित्य अकादमी पुरस्कृत उपन्यास) व 'सदी का सबसे बड़ा आदमी', 'जंगल जातकम' (कहानी) को कालजयी रचना का दर्जा मिला है। काशीनाथ सिंह ने हिंदी गद्य साहित्य की कई विधाओं में साहित्य का सृजन किया जिनमे मुख्य रूप से उपन्यास, कहानी, संस्मरण, आलोचना और नाटक विधाएँ शामिल हैं। प्रतिष्ठित लेखक काशीनाथ सिंह की अनेक रचनाओं को स्कूल के साथ ही बी.ए. और एम.ए. के सिलेबस में विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता हैं।

पीढ़ीगत द्वंद्व

वर्ग, लिंग, जाति तथा अन्य सामाजिक भेदों की भांति आयु भी एक सार्वभौमिक भेद है। जन्म से मृत्यु तक मानव शरीर विकसित होता रहता है किंतु इसके विकास में समय का अंतर देखा जाता है, जैसे युवावस्था और वृद्धावस्था के बीच आयु के साथ–साथ समय का भी काफी अंतर होता है। इस अंतराल के कारण इन दोनों पीढ़ियों के सोच विचारों में भी अंतर होने लगता है। किसी एक ही मुद्दे पर किसी युवा के विचार और वृद्ध के विचारों में मतभेद हो सकता है। अतः किन्हीं दो पीढ़ियों में परस्पर विचारों, अभिरुचियों, मूल्यों एवं संस्कारों, विश्वासों तथा आधुनिक तकनीकियों को लेकर जो मतभेद होते हैं, वही आगे चलकर द्वंद्व का रूप ले लेते हैं, इसे 'पीढ़ीगत द्वंद्व' कहा जा सकता है।

वी. के. आर. वी. राव के अनुसारः "राजनीतिक परिवर्तन तथा औद्योगिक तकनीकीकरण के कारण युवाओं के मन में परंपरागत जीवनमूल्य, संस्कृति तथा सामाजिक स्थापनाओं के प्रति आस्था समाप्त हो गयी है, जबकि दूसरी

तरफ बड़ी पीढ़ी के जीवनमूल्य परंपरागत ही है, दोनों विरोधी मूल्यों, मान्यताओं एवं आदर्शो के बीच संघर्ष होता है।"[1]

प्रो. दामले के अनुसार: "नयी पीढ़ी स्वयं ऊँचा उठना चाहती है और अपना अलग अस्तित्व बनाना चाहती है, लेकिन आज की विभिन्न परिस्थितियों उनके ऐसा करने में बाधक होती हैं।"[2]

इस प्रकार दो या दो से अधिक पीढ़ियों के मध्य यह द्वंद्व विभिन्न कारणों से उत्पन्न हो सकता है, जैसे– सामाजिक संरचना में तीव्र परिवर्तनों के कारण, पारिवारिक संरचना में परिवर्तनों एवं विघटन, मानदंडों तथा मूल्यों में संघर्ष, पारस्परिक विश्वासों की कमी, दोषपूर्ण सामाजीकरण, नगरीकरण एवं औद्योगीकरण, पश्चिमी संस्कृति और पीढ़ियों में शिक्षा की दृष्टि आदि। इन कारणों के चलते पीढ़ियाँ परस्पर टकराती रहती हैं और ये टकराव समाज में अनेक समस्याएं उत्पन्न करने लगते हैं। इन टकराव या द्वंद्वों के परिणामस्वरुप वैयक्तिक तथा पारिवारिक विघटन को प्रोत्साहन मिल रहता है। इससे व्यक्ति में अलगाव की प्रवृत्तियाँ विकसित होने लगती हैं। इस द्वंद्व के फलस्वरुप सामुदायिक विघटन की परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं। इससे द्वेष, घृणा तथा अविश्वास को प्रोत्साहन मिलता है। इस द्वंद्व का सर्वाधिक नुकसान समाज में उपस्थित बुजुर्ग पीढ़ी को हो रहा है वह हाशिए पर सरकती जा रही है। आधुनिक नई तकनीकी एवं नए मूल्यों तथा संस्कारो को समझना उनके लिए आसान नहीं है। इस कारण ये वृद्ध समाज में पिछड़ते जा रहे हैं। एक तो वे शारीरिक समस्याओं से जूझ रहे होते हैं और दूसरी तरफ जब वे समाज तथा परिवार में उपेक्षित होने लगते हैं तो वे मानसिक तौर पर भी परेशान होने लगते हैं। वे अपने को अकेला और असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। ये सभी समस्याएं पीढ़ियों में द्वंद्व का ही परिणाम है। युवा पीढ़ी में नैतिक एवं परंपरागत मूल्यों का दिन प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है और वृद्ध पीढ़ी नए आधुनिक मूल्यों के साथ समायोजन करना नहीं चाहती या फिर नए परिवर्तनों के अनुसार ढालना उनके वश में नहीं रहा। इसी कारण दोनों पीढ़ी एक–दूसरे को सहारा देने के बजाय एक–दूसरे के सामने खड़ी होती दिखाई देती हैं। आज की स्थिति यह है कि जब वृद्ध पीढ़ी को उसके अनुभव और सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण उसे समाज में सम्मान दिया जाता है तो युवा पीढ़ी यानी उनकी संतानें उसे अपना प्रतिद्वंद्वी समझती हैं और उससे ईर्ष्या करने लगती है। इसी प्रकार का नकारात्मक व्यवहार द्वंद्व की परिस्थितियों को जन्म देता है। हिंदी साहित्य के विभिन्न उपन्यासकारों ने पीढ़ीगत द्वंद्व की समस्याएँ, उसके कारण, परिणाम और संभावित समाधानों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस शोध पत्र के माध्यम से हिंदी साहित्य के वरिष्ठ लेखक काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में चित्रित पीढ़ीगत द्वंद्व पर प्रकाश डाला गया है।

'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में पीढ़ीगत द्वंद्व

काशीनाथ सिंह के इस उपन्यास में गाँव से शहर और शहर से अमेरिका तक के भूगोल को निरूपित करते हुए वहाँ के समाज और संस्कृति का बेजोड़ चित्रण मिलता है जो भूमंडलीकरण एवं भौतिकतावादी युग में जीवन मूल्यों, संवेदनाओं, संबंधों तथा मानवीयता के तार–तार होते दृश्यों को भी प्रतिबिंबित करता है। इस उपन्यास के केंद्रीय पात्र की भूमिका में 71 वर्षीय वृद्ध रघुनाथ (रग्घू) है जो कॉलेज के अध्यापक रह चुके हैं। रघुनाथ के माध्यम से लेखक ने समाज में रह रही वृद्ध पीढ़ी की समस्याओं और युवा पीढ़ी के द्वारा की जा रही उपेक्षाओं तथा अवहेलनाओं पर प्रकाश डाला है। इसके साथ ही रघुनाथ के चरित्र के माध्यम से दो पीढ़ियों में आपसी समायोजन एवं समन्वय का चित्रण भी किया है। रघुनाथ की सोच परंपरागत और आधुनिक मूल्यों के समन्वय पर आधारित है। एक तरफ वह अपने पुरखों की धरोहर खेत और घर को सहज कर रखना चाहते हैं तो दूसरी ओर आधुनिक मूल्यों के साथ सामंजस्य करने में कोई संकोच नहीं करते। चूंकि वह वृद्धावस्था में है और उनके बेटे–बेटी एवं भतीजे युवावस्था में है इसलिए उनके इतने समायोजनपूर्ण व्यवहार के पश्चात भी उन्हें उपेक्षित होना पड़ता है। वह हर बार आधुनिक युग की युवा पीढ़ी से आहत होते हैं, क्योंकि ये पीढ़ी जीवन मूल्यों एवं संस्कारों से परे शीघ्रातिशीघ्र (रातोंरात) बिना परिश्रम के धनवान बनने के सपने देखती है। इस व्यवहार को लेकर 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में पीढ़ीगत द्वंद्व की विस्तार से चर्चा की गई है। सामान्य तौर पर देखा जाए तो पीढ़ियों में परस्पर द्वंद्व की स्थिति परंपरागत मूल्यों एवं आधुनिक मूल्यों को लेकर ही होती है। परंपरागत मूल्यों का वहन करने वाली वृद्ध पीढ़ी अपने

अतीत से जुड़े मूल्यों के साथ जीवन व्यतीत करती हैं। नए आधुनिक मूल्य को स्वीकार करना उनके लिए आसान नहीं होता। वहीं दूसरी ओर युवा पीढ़ी आधुनिक तकनीकी मूल्यों के साथ अपने उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर होने के हर संभव प्रयास करती है। अतः इन परंपरागत एवं आधुनिक मूल्यों को लेकर दोनों पीढ़ियों में टकराव की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। इस पीढ़ीगत द्वंद्व के कई कारण देखे जा सकते हैं, जैसेः पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य आदि। 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में भी इन सभी क्षेत्रों में पीढ़ीगत द्वंद्व देखा जा सकता है। इसकी चर्चा विस्तार से की जा सकती है।

पारिवारिक कारण

जब एक ही परिवार में कई व्यक्ति रहते हैं तो उनके विचार भी अलग–अलग होते हैं। युवा पीढ़ी आधुनिक दिखावे को अधिक महत्त्व देती है और जो बुजुर्ग पीढ़ी है वह पारिवारिक हित को ध्यान में रखकर कार्य करती है। आधुनिक पीढ़ी सोचती है कि उनकी सोच पुराने जमाने की और पिछड़ी हैं जिससे जीवन में आगे बढ़ा ही नहीं जा सकता और इसी कारण यह पीढ़ी उनकी उपेक्षा करने लगती है। उनकी बातों की अवहेलना करने में कोई संकोच नहीं करती, इससे परिवार में द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। समस्या तब होती है जब दोनों में से कोई झुकने को तैयार ही नहीं होता, दोनों के अहम् टकराने लगते हैं किंतु 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास के रघुनाथ ऐसे नहीं हैं। वह अपने बेटों की रुकावट नहीं बनना चाहते किंतु उनके बेटे उन्हें समझने में असमर्थ हैं। इस कारण वह आहत होते रहते हैं। उनके दो बेटे और एक बेटी है लेकिन उनके साथ गाँव में कोई नहीं रहता। इस बात पर भी वह अपने मन को समझा लेते हैं लेकिन जब गाँव के अन्य लड़कों को देखते हैं तो वह दुखी हो उठते हैं। इसको लेखक ने इस प्रकार व्यक्त किया है– "रघुनाथ भी चाहते थे कि बेटे आगे बढ़े। वह खेत और मकान नहीं हैं कि अपनी जगह ही न छोड़े! लेकिन यह भी चाहते थे कि ऐसा भी मौका आए जब सब एक साथ हो, एक जगह हो– आपस में हँसें, गाएं, लड़े–झगड़े, हा– ही हू– हू करें, खाएँ– पिएँ, घर का सन्नाटा टूटे। मगर कई साल हो रहे हैं और कोई कहीं है कोई कहीं।"[3]

इस तरह से रघुनाथ रूढ़ीवादी बुजुर्ग नहीं हैं जो संतान से अपनी हर बात मनवाने के लिए उस पर दबाव डालें, अपने अहम् के आगे हर किसी को झुकाने की कोशिश करें बल्कि वह बस इतना चाहते हैं कि बच्चे जड़ों से जुड़े रहें और उनको कंधों का सहारा मिलता रहे। संतान के साथ न रहने पर उनके नौजवान भतीजे भी उन पर हावी होने लगते हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उनके पुरखों की जमीन पर कब्जा करने के लिए उन्हें डराते हैं। भतीजो से एक बार उन्होंने मना करने की कोशिश की थी– "नरेश का छोटा भाई देवेश दौड़ा और धक्का मार कर रघुनाथ को गिरा दिया। वे संभलें इसके पहले ही उनकी छाती पर बैठकर चीखा– साले बुड्ढे! टेंटुआ पड़कर अभी चाप दें तो टें बोल जाओगे।"[4]

उन्हीं के द्वारा पढ़ाए–लिखाए गए भतीजो के इस दुर्व्यवहार से वह बहुत हताश हो गए। इससे ज्यादा दुखी वह तब हुए जब यह सब सुनकर उनके बेटे उन्हें दिलासा देने के बजाय उल्टा उन्हें ही गाँव छोड़कर शहर में रहने के लिए बोल रहे थे। बेटा चाहे कितना भी दूर हो जाए लेकिन पिता को यही भरोसा रहता है कि मुसीबत में बेटा शरीर से नहीं तो मनोभाव से उसका साथ दे, उसे विश्वास दिलाए कि वह उसके साथ है वह अकेला और असुरक्षित नहीं है किंतु जब ऐसा नहीं होता तो एक पिता के लिए इससे बड़ा दुख शायद ही कोई और हो। डॉ. सूरज सिंह नेगी जिन्होंने वृद्ध पीढ़ी की समस्याओं को लेकर कई उपन्यास लिखे हैं, इस संदर्भ में कहते हैं– "दुनिया के प्रत्येक बाप की शायद यही सबसे बड़ी इच्छा होती होगी कि उसके द्वारा बताए गए मार्ग पर उसका बेटा चले और उसके त्याग, बलिदान, परोपकार, जीवन आदर्शों का मजाक न उड़ाकर उन्हें सम्मान प्रदान करे।"[5] रघुनाथ के बेटे तो उनका साथ देने के बजाय उनसे कहते हैं कि जमीन को लेकर क्यों मरे जा रहे हो। वे उन्हें गाँव छोड़कर शहर में बहू सलोनी के पास जाकर रहने के लिए दबाब डालते हैं।

यहाँ रघुनाथ की पत्नी शीला का व्यवहार उनसे थोड़ा अलग है। जिस प्रकार रघुनाथ अपनी बहू सलोनी के साथ एक पिता की तरह रहते हैं वैसे व्यवहार शीला उसके साथ नहीं कर पाती वह उसे बेटी की तरह नहीं बहू

की तरह ही दिखती है, उसकी हर बात उसके अहम् से टकराती नजर आती है। शीला अपनी बहू के साथ न रहकर अविवाहित बेटी के साथ रहती है। इन दोनों की आपसी झड़प के आधार पर कह सकते हैं कि पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी की दिनचर्या से परेशान है, जैसे– नई पीढ़ी का रात को लेट सोने, सुबह देर से जगना, जो मर्जी हो जब चाहे खाना आदि। इसी प्रकार शीला को भी बहू सोनल का देर से जगना अच्छा नहीं लगता और जब सोनल रात का बासी खाना नौकरानी को देने के बजाय कुत्ते बिल्ली को देना पसंद करती है तो शीला से इस बात पर बहस हो जाती है जो शीला को अच्छा नहीं लगता।

सामाजिक कारण

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में समाज बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सहयोग, सहिष्णुता, त्याग, सेवा व समानता आदि ऐसे सामाजिक मूल्य हैं जिनसे समाज में विभिन्नता होने के बावजूद भी एकता बनी रहती है किंतु आधुनिक प्रवृत्तियों के कारण इन मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है और इसका प्रभाव विभिन्न पीढ़ियों के संबंध पर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता दिखाई दे रहा है। पीढ़ीगत द्वंद्व का एक प्रमुख कारण समाज में हो रहे परिवर्तन भी है। आधुनिक समाज इतनी तेजी से परिवर्तित हो रहा है कि बुजुर्ग या पुरानी पीढ़ी उसके अनुसार ढलने में स्वयं को समर्थ समझ रही है। इस कारण युवा पीढ़ी जो परिवर्तन के प्रवाह में बह रही है, वह पुरानी पीढ़ी को पिछड़ा और बेकाम का समझने लगती है। इन सब के कारण यह बुजुर्ग पीढ़ी मानसिक द्वंद्व की शिकार होने लगती है। अपने भतीजे के द्वारा किए जा रहे दुर्व्यवहार पर गाँव वालों के मूक दर्शक बनकर देखते रहने तथा उनका बचाव न करने पर रघुनाथ मन ही मन सोचने लगते हैं कि:

"क्या हो गया है गाँव को?

यहीं पैदा हुए, पले–बढे, पढ़े–पढ़ाया, सबकी मदद की– कभी किताब कापी से, कभी फीस माफी से, कभी रूपय–पैसों से, कितने रिश्ते नाते हैं और रहेंगे आज भी, कल भी, क्या हो गया गाँव को?"[6]

इसी प्रकार जब वह वॉलंटरी रिटायर हो जाते हैं तो मैनेजर की लड़की के साथ बेटे संजय का विवाह न होने के बदले में मैनेजर ने उनकी पेंशन ही रोक ली थी और उन्हें बैंक के चक्कर लगाते–लगाते तथा ऑफिस वाले सदस्यों की संवेदनशून्यता से महसूस हुआ कि– "शरीफ' इंसान का मतलब है 'निरर्थक' आदमी, भले आदमी का मतलब है 'कायर' आदमी, जब कोई आपको विद्वान कहे तो उसका अर्थ मूर्ख समझिए और जब कोई सम्मानित कहे तो दानी समझिए।"[7]

इस तरह से लेखक काशीनाथ सिंह ने इस उपन्यास के माध्यम से समाज में बढ़ती जा रही संवेदनहीनता, वैचारिकशून्यता तथा अन्य नकारात्मक प्रवृत्तियों का बुजुर्ग पीढ़ी पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला है। उपन्यास के नायक रघुनाथ की सोच आधुनिक होते हुए भी उन्हें समाज की उपेक्षा और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है किंतु कठिनाई का सामना करके वह ऐसे समाज में स्वयं को समायोजित कर लेते हैं। प्राचीन कालीन समाज में वृद्ध पीढ़ी समाज का अभिन्न अंग थी किंतु आधुनिक समाज वृद्धों के महत्त्व, को अनुभवों को नजरअंदाज करता जा रहा है उसे एहसास ही नहीं है कि वृद्धों के अनुभवों के बिना कैसे समाज की कल्पना होगी? समाज में वृद्धों की आवश्यकता के संदर्भ में प्लेटो कहते हैं– "प्लेटो ने वृद्धों को समाज की आवश्यकता बताते हुए कहा था– वृद्ध आज्ञा देंगे और युवा आज्ञा का पालन करेंगे जब हम मृत पूर्वजों की पूजा करते हैं तो यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम हमारे पिता और पितामह, माता और दादी–नानी की आयु के समक्ष नतमस्तक हो।"[8] प्राचीन समाज में ऐसा ही होता था किन्तु आधुनिक समाज में ऐसा नहीं हो रहा। यह भी पीढ़ीगत द्वंद्व का एक प्रमुख कारण है।

आर्थिक कारण

'अर्थ' अर्थात धन–संपदा, भूमि एवं आय आदि जीवन यापन तथा आत्मविश्वास के लिए अति आवश्यक है किंतु इसका मतलब यह नहीं कि जीवन में सर्वाधिक महत्त्व 'अर्थ' को ही दिया जाए, इसके लिए मानवीय मूल्य, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों को दरकिनार कर दिया जाए। आज बाजारवाद, औद्योगिकीकरण तथा नगरीकरण ने

व्यक्ति को इतना कसकर जकड़ रखा है कि वह रिश्तों–नाते तथा सगे–संबंधियों को भी पीछे छोड़कर इन प्रवृत्तियों को अधिक महत्त्व दे रहा है। मानवीय संबंध तथा खूनी संबंध भी उपयोगिता की तराजू में तोले जाने लगे हैं जो रिश्ते–नाते उपयोगी होते हैं, उन्हें महत्त्व दिया जाता है किंतु जब रिश्ते उन्हें कोई फायदा नहीं देते तो वह उनसे कटने लगता है, उन्हें दूर करने लगता है, जैसा कि एक लेख में कहा गया है– "पारिवारिक और सामाजिक संबंधों के स्थापन और निर्वहन का मूल आधार 'अर्थ' हो गया है। आर्थिक हितों की दृष्टि में रखकर इनका स्थापन और निर्वहन किया जाता है। आर्थिक फायदा होता है तो संबंध निभाये जाते हैं और नहीं होता तो संबंध ठुकराये जाते हैं।"[9]

व्यक्ति की आर्थिक लिप्स ने उसे इतना स्वार्थी और स्वकेंद्रित बना दिया है कि वह अपनी पत्नी और बच्चों को भी निस्वार्थ दो मीठे बोल नहीं बोल सकता। रातों–रात अमीर बनने की लालसा ने माता–पिता और संतान के मध्य पितृत्व–मातृत्व प्रेम पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में रघुनाथ और मैनेजर के मध्य, रघुनाथ और उनकी संतानों के मध्य, संजय–सोनल तथा धनंजय और उसके साथ रह रही औरत के मध्य संबंधों का आधार अर्थ (धन) पर ही निर्भर प्रतीत होता है। मैनेजर अपने धनवान होने का फायदा उठाकर रघुनाथ का शोषण करना चाहता है। उसकी बेटी की शादी रघुनाथ ने अपने बेटे संजय से नहीं की तो वह रघुनाथ को वॉलेंटरी रिटायरमेंट के लिए मजबूर करता है और उनकी पेंशन भी रोक लेता है। इधर संजय ने बिना पूछे सक्सेना द्वारा दिए गए लालच में आकर उसकी बेटी से शादी कर ली जिससे रघुनाथ को मैनेजर के क्रोध का सामना करना पड़ा। दूसरा बेटा धनंजय से भी एक विधवा औरत के साथ बिना विवाह किये रहता है क्योंकि वह नौकरी करती है और धनी भी है। इसी प्रकार संजय ने सोनल सक्सेना की बेटी से शादी की थी अब वह उसे छोड़कर किसी एन.आर. आई. लड़की से शादी कर लेता है। इस प्रकार काशीनाथ ने इन सब पात्रों की प्रवृत्ति के जरिए समाज में आर्थिक स्थिति के कारण बदले मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों को उद्घाटित किया है। साथ ही युवा पीढ़ी की भौतिकतावादी एवं उपयोगितावादी प्रवृत्ति से बुजुर्ग पीढ़ी को होने वाली समस्याओं को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

सांस्कृतिक एवं नैतिक कारण

किसी भी समाज व राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति तथा उसमें प्रचलित मूल्य–संस्कार होते हैं। भारतीय संस्कृति की पहचान विश्व में अनूठी है जिसमें संयुक्त परिवार, विवाह संस्था, बुजुर्ग का मान सम्मान, पुरुषार्थ का महत्त्व प्रमुख सांस्कृतिक मूल्य हैं जिसके आधार पर भारत जाना जाता है लेकिन वैश्वीकरण एवं औद्योगिकीकरण की आंधी ने इन सांस्कृतिक मूल्यों को भी झकझोर दिया है। युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य संस्कृति के संक्रमण का असर इतनी तीव्रता से हुआ कि भारतीय संस्कृति धूमिल नाम पता नहीं चल रहा है। युवा पीढ़ी पर इनके कारण पक्ष संस्कृति का प्रवेश भारत में हुआ और युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य संस्कृति के संक्रमण का असर इतनी तीव्रता से हुआ कि भारतीय संस्कृति धूमिल पड़ने लगी।

आज संयुक्त परिवार का तेजी से विघटन हो रहा है, विवाह टूट रहे हैं बुजुर्ग हाशिए पर सरकते दिखाई दे रहे हैं। पुरुषार्थ के नाम पर केवल अर्थ को ही महत्त्व दिया जा रहा है– "यह एक मानी हुई वास्तविकता है कि सभ्यता के विकास में जो पूंजीवादी सोच संचालित होती है, मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाले समरसता के तमाम जरूरी मूल्य, सिद्धांत, मनोभाव, विचार सब हाशिए पर सरका दिए जाते हैं।"[10]

युवा पीढ़ी इस आधुनिक जीवन शैली में इस प्रकार ढल चुकी है कि अब उसमें अपने माता–पिता तथा अन्य सगे–संबंधियों के प्रति भावनाएं, संवेदनाएं, सहयोग का भाव आदि मूल्य लगभग शून्य होते जा रहे हैं। समाज के बड़े–बुजुर्गों से बातचीत करना, उनके साथ समय व्यतीत करना आदि व्यर्थ लगता है। इसका कारण समाज में उपस्थित दोनों पीढ़ियों में युवा पीढ़ी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है और प्राचीन मूल्य का तथा उनका वहन करने वाली पीढ़ी का महत्त्व दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है। इस नई पीढ़ी के बारे में लेखक काशीनाथ ने नायक रघुनाथ के माध्यम से कहा है:

"तभी से जब से गाँव में बिजली के खम्भे, केबुल, ट्यूबवेल, पंपिंगसेट, दवाखाने आये थे, जातियों की पार्टियाँ आई थी, हर तीसरे घर में किसी न किसी की भर्ती हुई थी, सवर्णों में एक नस्ल रिसर्च और कोचिंग करने वाले लड़कों की थी जो शहर से या किसी फौजी के घर से बोतल हासिल करते और रात पंपिंग सेट पर बिताते। दूसरी नस्ल नरेश और उसके भाइयों की थी। नरेश बिजली मैकेनिक था। सरकारी कर्मचारी था! लेकिन खंभे से तार खींचकर घर में अवैध कनेक्शन देता था और अच्छी खासी कमाई करता था।"[11]

यह युवा पीढ़ी विवाह को लेकर भी पाश्चात्य संस्कृति को अपना रही है। एक शादीशुदा दांपत्य जीवन शायद ही कभी सफल होता हो। इसी प्रकार संजय भी सक्सेना की बेटी सोनल से विवाह अमेरिका में व्यवस्थित होने के लिए करता है और जब वह अमेरिका से व्यवस्थित हो जाता है तो उसे छोड़कर किसी एन.आर.आई. लड़की से विवाह कर लेता है और सोनल से भी बॉयफ्रेंड बनाने के लिए कहता है: "मैं तो डियर परदेस को ही अपना देश बनाने की सोच रहा हूँ। मुस्कुराते हुए उसने आंख मार कर कहा तुम भी क्यों नहीं ढूंढ लेती एक बॉयफ्रेंड निश्चित हो जाऊंगा हमेशा के लिए! हा हा हा..."[12]

ऐसी सोच रखने वाली युवा पीढ़ी अपने रिश्तों–नातों को भी एक उपयोगी वस्तु की दृष्टि से देखती है। जब सगे–संबंधी उपयोगी एवं लाभदायक नहीं होते तो उसे त्याग देती है। इसी प्रकार पुरानी पीढ़ी अपने पुरखों की धरोहर, घर–जमीन, खेत–खलियान को सहज कर रखती थी और इसे बढ़ोतरी के साथ नई पीढ़ी को समर्पित कर देती थी। इस पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण में भी युवा पीढ़ी बहुत स्वार्थी हो रही है। उसमें पुरखों की धरोहर या निशानी से कोई लगाव नहीं दिखाई दे रहा। युवा पीढ़ी इस धरोहर की कीमत की तुलना अपनी मासिक आय से करती है और उसे बेचने में भी कोई संकोच नहीं करती। इस पीढ़ी के लिए यह मात्र जमीन का एक टुकड़ा है किंतु पुरानी पीढ़ी के लिए इससे मानवीय भावनाओं का रिश्ता जुड़ा होता है। इसी उपन्यास के नायक रघुनाथ गाँव की खेती अपने बेटों से संभालने के लिए कहते हैं तो बड़ा बेटा उसे बेचने के लिए कह देता है तब रघुनाथ बहुत आहत होते हुए कहते हैं– "इसलिए कि यह पाप में अपने हाथों नहीं करूंगा इसलिए कि वह पुरुषों की पुरखों की चीज है उनकी धरोहर है दूसरों की दूसरे की चीज बेचने का हक मुझे नहीं है।"[13] इस संदर्भ में लेखक आगे कहते हैं– "रघुनाथ के पास गाँव की जमीन के सिवा कुछ नहीं था और उसे जमीन को वह अनमोल समझते थे। बेटे उसे 'कैश' में भुना कर देखते थे और कह रहे थे कि इससे ज्यादा तो मेरी एक महीने की इनकम है।"[14]

इसी प्रकार के मूल्य एवं संस्कारों के क्षीण होते जाने पर लेखक वर्ग बहुत चिंतित है कि क्या होगा इस युवा समाज का जहाँ संवेदनहीनता अमानवीयता का व्यवहार हो रहा है वो भी समाज एवं परिवार की नींव बुजुर्ग पीढ़ी के साथ जो मानवीय मूल्य एवं संस्कारों के वाहक हैं। आज की युवा पीढ़ी इन मूल्य संस्कारों से वंचित हो रही है। वह अपने बच्चों एवं आने वाली पीढ़ियों में इन मूल्यों के स्थानांतरण के नाम पर क्या देगी यह अति चिंतनीय विषय है।

नगरीकरण

अन्य कारणों की भांति नगरीकरण भी पीढ़ीगत का द्वंद्व के प्रमुख कारण है। औद्योगिक विकास के कारण युवा पीढ़ी नगरों, महानगरों तथा विदेश की ओर आकर्षित हो रही है और अपनी जड़ों से कट रही है। इस कारण गाँव और शहर में बड़े–बूढों की संख्या अधिक दिखाई देती रही है क्योंकि यहाँ से युवा पीढ़ी खाने–कमाने के लिए महानगर और विदेशों में गई थी और वही रम गई। इस उपन्यास में भी लेखक ने इस चिंता पर प्रकाश डाला है। रघुनाथ बहू सोनल के साथ 'अशोक विहार' में रहते हैं तो उन्होंने यह अनुभव किया कि:

"न तो अखबार में कोई विज्ञापन था, न किसी नुक्कड़ पर इस आशय की होर्डिंग कि इस कॉलोनी के प्लॉट उन्हीं को बेचे जाएंगे जो पचास–पचपन के ऊपर के होंगे और जल्दी ही रिटायर होंगे लेकिन जाने यह कैसे हुआ कि जब कॉलोनी तैयार हुई तो पाया गया कि यह बूढों की कॉलोनी है। ऐसे बूढ़े–बुढ़ियों की जिनके बेटे–बेटी, अपनी बीवी बच्चे और बच्चों के साथ परदेस में नौकरी कर रहे हैं, कोई कोलकाता है, तो कोई दिल्ली, कोई मुंबई तो कोई बैंगलोर और कईयों के तो विदेश में।"[15]

ऐसा नहीं है कि ये सभी जन्म से ही यहीं रह रहे हैं बल्कि यहाँ भी ये अपने बच्चों के खातिर ही आए थे।

गाँव व छोटे शहरों में बिजली, पढ़ने–लिखने, आने–जाने आदि अच्छी सुविधाएं न होने के कारण बच्चों को सभी सुख–सुविधाएँ देने के लिए यह सब यहाँ आकर रहने लगे थे किंतु बच्चे यहाँ से भी बड़े–बड़े नगरों, महानगरों तथा विदेशों में जा पहुंचे और वही रम गए। इस प्रकार यह बड़े–बूढ़े माता–पिता जिनके लिए अपने घर से बेघर हुए थे अब उनके अपने अलग घर हो गए हैं। अब इनकी आंखें प्रतीक्षा में लगी रहती हैं कि उनकी संतान आएगी और उनसे बातचीत करेगी किंतु वर्षों बीत जाते हैं और कोई आने का नाम नहीं ले रहा।

इस प्रकार 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में पीढ़ीगत द्वंद्व के कारण उपरोक्त कारणों को चित्रित किया गया है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से सभी क्षेत्रों में पीढ़ी संघर्ष से पढ़ने वाले प्रभावों को उद्घाटित किया है। इस पीढ़ी संघर्ष की समस्या का सबसे अधिक प्रभाव बुजुर्ग पीढ़ी झेल रही है क्योंकि युवा पीढ़ी में तो इस संघर्ष को हल करने तथा झेलने की क्षमता होती है किंतु बुजुर्ग पीढ़ी शारीरिक तथा मानसिक समस्या से जूझती है तो इस संघर्ष से कैसे समायोजन कर सकेगी। बड़े–बुजुर्ग युवा पीढ़ी से ही उम्मीद करते हैं कि वह उन्हें इन समस्याओं से उभरने में उनका साथ दे किंतु वैश्वीकरण का प्रभाव युवा पीढ़ी पर इतना नकारात्मक हो रहा है कि वह भौतिक, उपयोगी एवं ऐश्वर्य की वस्तुओं की चकाचौंध में अपने सगे–संबंधी, रिश्ते–नातों की तरफ देख ही नहीं पा रही है। उसमें बढ़ती संवेदनशून्यता, भौतिक लिप्स तथा वैचारिकशून्यता उसे अधिक स्वकेंद्रित करती जा रही है जिसके परिणामस्वरूप पीढ़ी बुजुर्ग पीढ़ी स्वयं को अकेला, असुरक्षित तथा उपेक्षित महसूस कर रही है। इसी प्रकार इस उपन्यास में रघुनाथ की संतानों की महत्वाकांक्षाओं, पूंजी आकर्षण, उत्तरोत्तर क्षय होती संवेदनाओं व भावनाओं ने उन्हें समाज में अकेला और असुरक्षित और दयनीय बना दिया है। लेकिन रघुनाथ ऐसे वृद्ध नहीं है जो अपने आत्मसम्मान को दांव पर लगाकर जीते हो, जो युवा पीढ़ी की हरकतों को बर्दाश्त करते हो, वह तो ऐसे वृद्ध है जो आत्मसम्मान से जीते हैं और संतान को डांटना–फटकारने से भी चूकते नहीं हैं।

लेखक ने इस उपन्यास में न केवल पीढ़ियों में होने वाले परस्पर द्वंद्व को ही दिखाया है बल्कि उसके संभावित समाधान भी दिए हैं। रघुनाथ जो बुजुर्ग पीढ़ी का नेतृत्व करते हैं, उनके माध्यम से लेखक ने बड़े–बुजुर्गों को जीवन के अंतिम पड़ाव को सुखी और बिना क्लेष के जीने की कला प्रस्तुत की है। वैसे तो रघुनाथ बड़े ही विनम्र, मितभाषी और सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति हैं किंतु स्वाभिमान, आत्मसम्मान और पुरुखों की धरोहर, खेत–खलिहानों के प्रति प्रेम उनमें कूट–कूट कर भरा हुआ है। वह जड़ों से दूर जाने वाली युवा पीढ़ी जो अपने पुरखों के प्रति संवेदनहीन होती जा रही है, उन्हें समझाते हैं– "इसने तुम्हारी आजा को खिलाया, दादा–परदादा को खिलाया, बाप को खिलाया, तुम्हें खिलाया, यही नहीं; तुम्हारे बेटों और नाती–पोतों को भी खिलाएगी, तुम करोड़ों कामाओगे लेकिन रुपया और डालर नहीं खाओगे।"[16]

यह उन युवा संतानों को संदेश है जो अपने ऐशोआराम और झूठे आडंबर में अपने पुरखों की जमीन को बेच देते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति बहू–बेटों के साथ समायोजन नहीं कर पाते। घर में रोज लड़ाई–झगड़ा, वाद–विवाद होते रहते हैं और इन सबका कारण बहू को ठहरने लगते हैं, ऐसे वृद्धों के लिए लेखक ने रघुनाथ के माध्यम से समायोजन करने का एक सरल मार्ग सजाया है– "इन्हें 'ससुर' के बजाय 'बाप' बन कर चलना ज्यादा सुविधाजनक लगा था। अव्वल तो तनाव का कोई मसला पैदा ही न होने दो और पैदा भी हो तो गम खा जाओ या टाल जाओ! दो जून खाने और सोने से मतलब– बाकी तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।"[17] लेखक आगे कहते हैं– "बेटे बहू के साथ जीने का यही सलीका होना चाहिए कि न आप उनके मामले में दखल दें, न वे आपके मामले में! सह जीवन के लिए यह समझदारी जरूरी है।"[18]

दरअसल यह अनुभव उन्हें पत्नी शीला द्वारा की गई गलतियों से मिला। शीला और बहू सोनल के बीच किसी न किसी बात को लेकर वाद–विवाद होता रहता था जिससे शीला बहुत परेशान रहती थी और सोनल की शिकायत रघुनाथ से करती थी। लेकिन रघुनाथ ने शीला की गलती महसूस की जब शीला बहू के साथ रहने की बजाय बेटी के साथ रहना अधिक पसंद करती है तो और चली जाती है तो लेखक कहते हैं– "शीला को भी अपनी बेटी के घर बैठकर झाड़ू लगाना और खाना बनाना मंजूर लेकिन बहू के यहाँ मंजूर नहीं।"[19]

समस्या ही यही है कि यदि बहू और बेटी में भेदभाव किया जाए तो बुजुर्ग पीढ़ी के लिए समायोजन करना मुश्किल हो जाता है। यहाँ शीला बहू की एक भी हरकत बर्दाश्त नहीं कर सकती और बेटी के सारे नाज–नखरे उठा सकती है। शीला रघुनाथ को अकेला छोड़कर बेटी के साथ जाकर रहने लगती है लेकिन रघुनाथ ऐसी गलती नहीं करते, उन्होंने तो बहू को ही बेटी मान लिया और वह एक बाप की तरह व्यवहार करते हैं। यह बात और भी सत्य सिद्ध हो जाती है जब बेटा अमेरिका में ही दूसरा विवाह कर लेता है और सोनल को छोड़ देता है तब वह सोनल का विवाह समीर से कराकर कन्यादान लेने की बात करते हैं– "रघुनाथ ने मन बनाया कि अगर वह सचमुच समीर को प्यार करती हो और उसके साथ घर बसाना चाहती हो तो वे पापा की हैसियत से कन्यादान करने में पीछे नहीं हटेंगे।"[20]

वृद्ध पीढ़ी यदि इस प्रकार की सकारात्मक सोच रखे तो उनका समाज में समन्वय एवं समायोजन करना आसान हो जाएगा। वृद्ध अनुभवों का भंडार है और अपने इन अर्जित अनुभवों का उपयोग गर्म जोशी युवा पीढ़ी से व्यवहार करने में करें तो समाज में यह ज्वलंत समस्या के रूप में उभर रही पीढ़ी संघर्ष (द्वंद्व) की समस्या का समाधान संभव हो सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लेखक काशीनाथ सिंह द्वारा रचित 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास एक व्यापक दृष्टिकोण को इंगित करता है। इसमें चित्रित ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन का संक्रमण इसे और अधिक व्यापक व बहुआयामी बना देता है। इस उपन्यास में न केवल आधुनिक किसानी जीवन को चित्रित किया गया है बल्कि वर्तमान समय में वैश्वीकरण, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के चक्रव्यूह में फँसती जा रही युवा पीढ़ी के कारण समाज पर पड़ने वाले प्रभावों, कारणों तथा उनसे उत्पन्न समस्याओं को भी उद्घाटित किया गया है। भारत में विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ आई विदेशी संस्कृतियाँ भारतीय युवाओं को इतना अधिक प्रभावित कर रही है कि वह भारतीय संस्कृति और समाज को पिछड़ा समझने लगे हैं। उन्हें अपने देश में कमियाँ ही नजर आ रही है और विदेशी संस्कृति को अपनाकर स्वयं पर गर्व महसूस करने लगते हैं। विदेशों में जाकर रहना तो उन्होंने जैसे फैशन बना लिया है। वे अपने संस्कार, मूल्य एवं संस्कृति की कोई परवाह नहीं करते। वहीं दूसरी ओर बुजुर्ग (वृद्ध) पीढ़ी अपने मूल्य, संस्कारों तथा भारतीय संस्कृति में इस तरह से ढली हुई है कि इसमें परिवर्तन की कोई गुंजाइश ही नहीं होती। वह इसमें परिवर्तन करने की सोच ही नहीं सकती। यदि युवा पीढ़ी इसमें परिवर्तन करती है तो इसे वह अपनी अवहेलना मानने लगती है और शायद इसी कारण विदेशों की ओर आकर्षित होती जा रही युवा पीढ़ी तथा जड़ों से मोह रखने वाली बुजुर्ग पीढ़ी के मध्य होने वाले द्वंद्व बढ़ने लगते हैं और परिवार टूटकर बिखरने लगते हैं। 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में ऐसे ही कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। इस उपन्यास में लेखक ने केवल समस्याओं को ही समाज के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि इन समस्याओं के संभावित समाधान एवं सुझाव भी देने का जो सुलभ प्रयास किया है इसकी विस्तृत चर्चा इस लेख के माध्यम से की गई है। उपन्यास को पढ़ते समय पर कहीं–कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि पीढ़ीगत द्वंद्व को सुलझाने के लिए जो समाधान सुझाए गए हैं वे लेखक स्वयं के अनुभवों पर आधारित हो जिन्हें वह समाज तक पहुंचाकर रचना का उद्देश्य पूर्ण कर रहे हो।

संदर्भ सूची

1. बहुगुणा, उमा; यादव, रजनीश कुमार; मिश्रा, उमा (2015) *भारतीय समाजः निर्गम (मुद्दे) एवं समस्यायें,* वेदान्त पब्लिकेशन, लखनऊ, 2015, पृ. 116।
2. बहुगुणा, उमा; यादव, रजनीश कुमार; मिश्रा, उमा (2015) *भारतीय समाजः निर्गम (मुद्दे) एवं समस्यायें,* वेदान्त पब्लिकेशन, लखनऊ, 2015, पृ. 116।
3. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 133।
4. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 81।

5. नेगी, सूरज सिंह (2019) *नियति चक्र,* सनातन प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ. 124।
6. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 81।
7. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 86।
8. मौलेश्वर, चंद्र; शर्मा, ऋषभदेव (2019) *वृद्धावस्था विमर्श,* परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद, पृ. 35।
9. सुथार, मनीष (2022) *हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्शः दशा और दिशा,* वान्या पब्लिकेशन, कानपुर, पृ. 57।
10. हृदयेश (2013) *चार दरवेश,* हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, पृ. 117।
11. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 82।
12. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 110।
13. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 143।
14. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 149।
15. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 104।
16. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 85।
17. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 128।
18. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 128।
19. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 142।
20. सिंह, काशीनाथ (2023) *रेहन पर रग्घू,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 161।

****